ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-पाठ्य सहगामी क्रिया

दिनांक—30/10/2020

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

प्यारे बच्चों! आज सी.सी.ए. कक्षा के अंतर्गत हम आज के दिवस की महत्ता को जानेंगे ।आज शरद् पूर्णिमा है। शरद् पूर्णिमा से संबंधित हमारे भारतवर्ष में जो महत्वपूर्ण मान्यताएँ हैं। आप इसे पढ़ें।

शरद् पूर्णिमा या कोजागिरी पूर्णिमा का पर्व आज मनाया जा रहा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शरद् पूर्णिमा काफी महत्वपूर्ण तिथि है। इसी तिथि से शरद् ऋतु का आरम्भ होता है। इस दिन चन्द्रमा संपूर्ण और सोलह कलाओं से युक्त होता है। इस दिन चन्द्रमा से अमृत की वर्षा होती है जो धन, प्रेम और सेहत तीनों देती है। प्रेम और कलाओं से
~~~~~~~~~~

परिपूर्ण होने के कारण कृष्ण ने इसी दिन महारास रचाया था।आगे पढ़ें शरद् पूर्णिमा से जुड़ी मान्यताएं-

भगवान श्री कृष्ण ने इस दिन की थी रासलीला- इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने 'रास लीला' की थी। इसलिए इसे रास पूर्णिमा भी कहते है।

माता लक्ष्मी करती हैं रात्रि में विचरण- शरद् पूर्णिमा को कोजागरी व्रत भी किया जाता है और माता लक्ष्मी, कुबेर और इन्द्र देव का पूजन और श्री सूक्त, लक्ष्मी स्तोत्र और लक्ष्मी मंत्रों का जाप करते है ऐसी मान्यता है कि माता लक्ष्मी रात्रि में विचरण करती है और भक्तों पर धन-धान्य से पूर्ण करती है।

अश्विन महीने की शरद् पूर्णिमा बेहद खास होती है। कहा जाता है कि इस दिन रात को खीर खुले आसमान में रखी जाती है। जिसके बाद उसे प्रसाद के रूप में खाया जाता है। शरद् पूर्णिमा की रात को चांद धरती को सबसे करीब होता है। कहा जाता है कि शरद् पूर्णिमा को चांद 16 कलाओं से संपन्न होकर अमृत वर्षा करता है जो स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।

इस दिन व्रत रख कर विधि-विधान से लक्ष्मीनारायण का पूजन किया जाता है और रात में खीर बनाकर उसे रात में आसमान के नीचे रखा जाता है। कहा जाता है कि इस दिन चंद्रमा की चांदनी का प्रकाश खीर पर पड़ना चाहिए। वहीं दूसरे दिन सुबह स्नान करके खीर का भोग अपने घर के मंदिर में लगाकर कम से कम तीन ब्राह्मणों को खीर प्रसाद के रूप में देकर परिवार में बांटी जाती है। इस प्रसाद को ग्रहण करने से अनेक प्रकार के रोगों से छुटकारा मिलता है। मान्यता है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ महारास रचा था।